[श्री देवराव पाटील]

काटन कारपोरेशन और महाराष्ट्र गवर्नमेंट ने इस सम्बन्ध में जो स्कीम बनाई है, उसके लिए केन्द्र सरकार पैसा नहीं द सकी और नतीजा यह हुआ कि डिफर्ड पेमेंट शुरू कर दिया। मैं माननीय मंत्री जी से नम्रता पूर्वक कहना चाहता हूं कि महाराष्ट्र गवन्मट ने जो मोनोपली प्रोक्योरमेंट स्कीम चला रखी है, उसके मुताबिक गरेंटीड प्राइस का 30 परसट दाम वह किसानों को उनके कपास का एडवान्स कर देती है और बाकी 70 परसेंट पैसा 30 जून तक देना होता है। इस तरह से महाराष्ट्र गवर्नमट को 30 जून तक सब किसानों को उनको कपास का पूरा पैसा देना होगा। कामर्स मिनिस्टर साहिब को यह बात अच्छी तरह से मालूम होगा। इसलिए म आपक मारफत वित्त मंत्री जी से यह निवेदन करना चाहता हूं कि अगर मोनोपली प्रोक्योरमट के लिए पैसा महाराष्ट्र गवर्मेंट को उपलब्ध नहीं कराया जायेगा, तो इससे किसानों को और महाराष्ट्र गवर्नमेंट को भी परेशानी होगी। सरकार का यह कहना गलत है कि अगर कपास के खरीदने के लिए पैसा दे दिया जायगा तो इससे इंफ्लशन बढ़ जायगा। लेकिन यह तो केवल दो महीनें की बात है और दो महीनें के बाद तो सरकार को सब पसा वापस मिल जाने वाला है और साथ ही उसमें व्याज भी मिलगा। इस लिए मैं फिर निवदन करूंगा कि सरकार को इस कार्य के लिए महाराष्ट्र सरकार को पैसा अवश्य दे देना चाहिए।

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: Sir, ...

SHRI RAJNARAIN: Don't repeat the same.

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: The questions are being repeated. What can I say? Sir, honestly speaking, the advice of Mr. Rajnarain is absolutely acceptable to me. What I will be saying, I will be repeating.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I hope he maintains the same attitude when he is involved.

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: Only I will say that the Agricultural Prices Commission every year fixes the price...

SHRI BHUPESH GUPTA: At least once Mr. Rajnarain has given a sensible advice and in an equally sensible way, you have accepted it.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY (Uttar Pradesh): It applies to you also.

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: This price is suggested by the Agricultural Prices Commission, an expert body, consisting of economists and agricultural experts, etc. Therefore, the Government is bound to accept...

(*Interruption*)

SHRI MULKA GOVINDA REDDY: They have no experience.

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: I do not like to comment on their competence. They have their own views. The Government has formed the body, taking the best available people. Also records show that from year to year price is upwardly revised. That also indicates that the Government is alive to the increasing cost of production of cotton. But because of the dear money policy, Government has no alternative, but to cut down its credit accommodation for the CCI. This is not only for CCI, but for many other similar Corporations which could not be given the credit quantity which they had been getting in the last few years. This overall constraint has affected all sections of industry and some sections of trade, except the food trade. But Government has no other alternative left before it.

REFERENCE TO ILLTREATMENT OF HARIJANS

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, इस सदन में सत्ताधारी दल की ओर से हरिजनों के संबंध में घड़ियाल के आंसू बहुत बहाये जाते हैं मगर जब देखिए तो सत्ताधारी दल की ओर से ही उन पर प्रहार होता है। अभी-अभी मेरे पास कल बहुत से हरिजन नेता आये थे। यह थाना कैथल, जिला कुरुक्षेत्र, गांव गोहना के हरिजनों के साथ

वहां के तमाम प्रमुख लोग और वहां की पुलिस मिल कर उन पर बहुत अत्याचार कर रहे ह और वहां एक थानेदार है ओम प्रकाश तलवार, वह नाना प्रकार के अत्याचार करता है। वहां के श्री केहर सिंह जो हरिजन नता है वह कल मझसे मिले थे उनका कहना है कि 65 आदमियों को वहां बुरी तरह से पीटा गया है और उन को गिरफ्तार कर क जल म बद कर दिया गया है। हरिजनों को सारी को सा ी औरते इस समय अपने घरों से निकल रही है और वह निकल कर दोपहरो म खेता पर पड़ी रहती है और वह इस लिये अपने खेतों पर पड़ी रहती है कि उन के खेतों पर वह लोग नाजायज ढंग से अपना कब्जा करना चाहते हैं। उस के बाद भी वहां पुलिस जाती है और उन हरिजनों को औरतों को घसीटती है और ट्रैक्टर चलवा कर वहां के सरमायेदार लोग उन खेतों को जोतने की कोशिश करते है और उन पर अपना कब्जा दिखाना चाहते है। जब वह लोग हट जात है और ट्रैक्टर आदि चले जाते है तो फिर वह औरतें वहां जा कर लेट जाती है, पड़ जाती है। तो मैं इस संबंध में निवदन करना चाहता हूं कि आप ने विशेष अनुकंपा की है कि मुझे यह प्रश्न यहां उठाने की अनुमति दी। एक हरियाणा के प्रसिद्ध हरिजन नेता है और वहां के वधायक भी है चौधरी चांद राम उन्होंने एक चिठ्ठी भी लिखी है और वह चिट्ठी 8 मई की है। उस में उन्होंने कहा है क वहां हरिजनों के साथ इस प्रकार से अत्याचार हो रहा है। उन्होंन उस में एक व्यक्ति का नाम भी बताया है। मैं जानता नहीं कि उस सब में उनका हाथ है या नहीं, लेकिन यदि उनका हाथ इस सब में है तो मुझे दुख है इस लिये खास कर कि वह स्वयं राज्य सभा के सदस्यों है। चौधरी चांद राम जी ने नाम लिखा है श्री सुलतान सिंह एम०पी०का। मैं इस लिये कह रहा हूं कि मैं ने इस की जांच नहीं की है। अगर श्री सुलतान सिंह, एम० पी० का इस में हाथ है तो वह इस में से अपने हाथ को खींचे और वह वहां के हरिजनों की मदद करें न कि वहां के आततायियों की मदद करें या वहां के सरमायेदारों की मदद करें। मैं उनसे इतना ही निवेदन करूंगा और शासन से बहुत तो नहीं कहूंगा क्योंकि इस समय हरिजनों पर तो चारों तरफ से आफत आ रही है। आप समाचार पत्रों में देखेंगे कि कहीं न कहीं, किसी गांव में, किसी जिले में, किसी शहर में कहीं हरिजनों को जिन्दा जलाया जा रहा है या उनके घरों को उखाड़ कर फेंक दिया जा रहा है। यह सब अत्याचार उन पर बराबर किये जा रहे है। तो इस लिये मैं थोड़ेसे शब्दों में आप के द्वारा ओम् मेहता जी से विशेष तौर से कहूंगा कि इस मसले पर वह ध्यान में क्योंकि यह उन के दल के लोगों का काम है। यह दिल्ली की नाक के नीचे सब हो रहा है। तो कम से कम यहां वह ऐसा न होनें दें।

REFERENCE TO DUMPING OF BOOKS WORTH CRORES OF RUPEES WITH N.B.T.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (उत्तर प्रदेश): उपाध्यक्ष महोदय, मैं जब इस प्रश्न को उठाना चाहता हूं तो सौभाग्य से शिक्षा मंत्री प्रो० नुरुल हसन साहब यहां मौजूद है। उन के मंत्रालय से संबंधित धन का दुरूपयोग किस प्रकार से हो रहा है और किस तरह से करोडों रुपयों की पुस्तकें आज गोदामों में दीमकों का आहार बनने जा रही है इसकी ओर मैं उनका ध्यान दिलाना चाहता हूं। मार्च के महीने में इस प्रकार का एक प्रश्न आया था जिस में पूछा गया था कि क्या शिक्षा मंत्रालय से संबंधित जो चार संगठन है जिन में एक सेंट्रल हिन्दी डाइरेक्टोरेट है, दूसरा नेशनल बुक ट्रस्ट है, तीसरा साहित्य अकादमी और चौथा ललित अकादमी है, उनके गोदामों में कितने रुपयों की पुस्तकें पड़ी हु है, तो उन्होंने स्वयं 5 मार्च को उत्तर देते ए बताया